भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा "सोयाबीन की शीघ्र, मध्यम एवं अधिक समयावधि वाली किस्में तथा उनकी बीज उपलब्धता" पर वेबिनार का दिनांक 4 जून 2020 को आयोजन की प्रेस नोट

दिनांक 3 जून 2021 को रेजीडेंसी कोठी में आयोजित बैठक में इंदौर के लोकप्रिय सांसद महोदय माननीय श्री शंकर लालवानी जी एवं जिलाधीश श्री मनीष सिंह जी के सुझाव एवं निर्देशानुसार नुसार जिला प्रशासन उपसंचालक (कृषि), जिला इंदौर के सहयोग से आज दिनांक 4 जून 2021 को भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा **"सोयाबीन की शीघ्र, मध्यम एवं अधिक समयावधि वाली किस्में तथा उनकी बीज उपलब्धता" विषय पर** एक ऑनलाइन वेबिनर का आयोजन किया गया जिसमे इंदौर के साथ-साथ मध्य प्रदेश के अन्य जिले के 220 से अधिक कृषकों एवं विस्तार कर्मियों ने भाग लिया.

वेबिनार के प्रारंभ में स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए संस्थान की निदेशक डॉ. नीता खांडेकर ने बताया की विगत दो वर्षो से ख़राब मौसम के कारण सोयाबीन के बीजोत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत लक्ष्यों की पूर्ति में कमी देखि गयी हैं. इसी प्रकार प्रदेश के किसान जो अपने पास उपलब्ध बीज का बोवनी हेतु उपयोग करते हैं, उनके बीच प्रचलित सोयाबीन किस्म जे.एस. 95-60 की गुणवत्ता में कमी आने के कारण उन्होंने अन्य वैकल्पिक सोयाबीन की किस्मों की खेती करने की सलाह दी और संस्थान के वैज्ञानिकों से अनुरोध किया की सोयाबीन बदलते हुए मौसम के परिपेक्ष एवं कीट/रोग के प्रबंधन हेतु सम्बंधित वैज्ञानिको को की प्रतिबद्धता को दोहराया.

इस अवसर पर माननीय श्री शंकर लालवानी जी ने सोयाबीन की फसल में आ रही कीट एवं व्याधियों की समस्याओ तथा इसकी निरंतर खेती के विकसित उत्पादन तकीनीकी एवं नवीनतम पद्धतियों के प्रचार-प्रसार हेतु किये जा रहे प्रयासों के लिए भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान की प्रशंसा की. उन्होंने किसानो को संबोधित करते हुए कहा की ख़राब मौसम एवं कीट/रोगों के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान की द्वारा की गई 2-3 किस्मों की खेती किये जाने अनुशंसा का अनुपालन करना चाहिए.

इस वेबिनार के दौरान उपसंचालक कृषि, जिला इंदौर श्री एस.एस. राजपूत ने इंदौर जिले के सभी शासकीय एवं निजी बीज कंपनियों का उल्लेख करते हुए कहाँ कि किसान हमेशा सोयाबीन के बीज जो अधिक मात्रा में उपयोग करते हैं. अतः आई.आई.एस.आर की अनुशंसा के अनुसार किसान भाइयों ने सोयाबीन के बीज का न्यूनतम 70 प्रतिशत अंकुरण के आधार पर 60-80 किलोग्राम/हें. की दर से प्रयोग करना चाहिए, जिससे बीज की कमी की समस्या का भी कुछ हद तक निराकरण किया जा सके.

इस वेबिनर में भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के डॉ. मृणाल कुचलन ने किसानों को रेत से भरी ट्रे का उपयोग करते हुए सोयाबीन के बीज का अंकुरण परिक्षण करने का सरल उपाय बताया. साथ ही डॉ

अमरनाथ शर्मा, सेवा निवृत प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) एवं अध्यक्ष पौध संरक्षण विभाग द्वारा सोयाबीन की फसल में पीले मोज़ेक बीमारी, सफ़ेद मक्खी एवं अन्य कीतो के नियंत्रण करने का वैज्ञानिक तरीका बताया. साथ ही उन्होंने सोयाबीन की फसल में उचित कीट प्रबंधन हेतु समेकित कीट प्रबंधन के अन्य तरीके जैसे पिली चिपचिपि पत्तिय, फेरोमोन ट्रैप, प्रकाश प्रपंच आदि तरीको को अपनाने की सलाह दी.

इस अवसर पर भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिकी डॉ. बी.यू. दुपारे (प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विस्तार) द्वारा प्रदेश के सोयाबीन कृषको ले लिए निम्न सम-सामायिक सलाह जारी की गई.

1. कृषकगन एक ही किस्म पर निर्भर रहने की बजाए अलग अलग समयावधि में पक्नेवाली (शीघ्र पक्नेवाली, माध्यम समयावधि वाली व अधिक समयावधि वाली) कम से कम 2-3 किस्मों की खेती करे. वर्तमान में किसानो में प्रचलित सोयाबीन प्रजाति जे.एस. 95-60 में विगत कुछ वर्षों से कीट व्याधियों की समस्याओं में वृद्धि देखि जा रही हैं. अतः सलाह है की इस किस्म के स्थान पर विकल्प के रूप में शीघ्र समयावधि में पक्नेवाली अन्य किस्म जे.एस. 20-34 की खेती करे.
2. विगत कुछ वर्षों में फलियाँ पकने के समय अधिक समय तक/अत्यधिक वर्षा के कारण सोयाबीन की फसल में नुकसान हुआ हैं. अतः यह सलाह हैं कि किस्मों की सोयाबीन किस्मों की विविधता बढाने हेतु जे.एस. 20-29, जे.एस. 20-69, जे.एस.20-98 जैसी किस्मों के अंतर्गत क्षेत्र बढाकर जे.एस. 95-60 का क्षेत्रफल कम करे.
3. यह सलाह है की सोयाबीन की बोवनी से पूर्व उपलब्ध बीज का अंकुरण परिक्षण करे एवं न्यूनतम 70 प्रतिशत अंकुरण, एवं बीज का आकार के आधार पर 60-80 किग्रा/हें. बीज दर का प्रयोग करे. यदि बीज का अंकुरण 65, 60, 55 या 50 प्रतिशत अंकुरण क्षमता वाले बीज को उपयोग करते हुए 75, 80, 90 या 100 किग्रा/हें. बीज दर का प्रयोग करे.

4. सोयाबीन में विगत वर्षों से देखि जा रही फफूंद एवं वायरस जनित बीमारियों से सुरक्षा के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले रोग मुक्त बीज का उपयोग करे. यह भी सलाह हैं कि कीट/रोग से सुरक्षा की दृष्टी से सोयाबीन की बोवनी के समय फफूंदनाशक, कीटनाशक एवं जैविक कल्चर से बीजोपचार अवश्य करे. इसके लिए बौवनी से पहले सोयाबीन बीज को अनुशंषित पूर्वमिश्रित फफूंदनाशक पेनफ्लूफेऩ + ट्रायफ्लोक्सिस्ट्रोबीन 38 एफ.एस) .1 मि.ली/.कि.ग्रा .बीज (या कार्बोक्सिन 37.5%+थाइरम 37.5% (3 ग्राम/कि.ग्रा .बीज (या थाइरम) 2 ग्राम (एवं कार्बेन्डाजिम) 1 ग्राम (प्रति कि.ग्रा .बीज अथवा जैविक फफूंदनाशक ट्राइकोडर्मा विरिडी) 8-10 ग्राम प्रति कि.ग्रा .बीज (से उपचारित करें।
5. उपरोक्त के साथ साथ पीला मोजाइक बीमारी एवं तना मक्खी का प्रकोप प्रत्येक वर्ष होने वाले क्षेत्रों में उपरोक्त फफूंदनाशक से बीजोपचार के पश्चात कीटनाशक थायामिथोक्सम 30 एफ.एस. (10 मि.ली. प्रति कि.गा. बीज) या इमिडाक्लोप्रिड (1.25 मि.ली./कि.ग्रा. बीज) से बीज उपचार करने की अनुशंसा की जाती है।
6. उपरोक्त अनुशंषित कवकनाशियों द्वारा उपचारित बीज को छाया में सूखाने के पश्चात् जैविक खाद ब्रेडीराइजोबियम कल्चर तथा पीएसबी कल्चर दोनों (5 ग्राम/कि.ग्रा बीज) से टीकाकरण कर तुरन्त बौवनी हेतु उपयोग करना चाहिए।
7. कृषकगण यह विशेष ध्यान रखें कि क्रमानुसार फफूंदनाशक, कीटनाशक से बीजोपचार के पश्चात् ही जैविक कल्चर/खाद द्वारा टीकाकरण करना चाहिए। साथ ही कल्चर व कवकनाशियों को एक साथ मिलाकर कभी भी उपयोग में नहीं लाना चाहिए।